३ अविकारी शब्द

जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक और पुरुष के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है, ऐसे शब्द **'अविकारी शब्द'** या **'अव्यय'** (Indeclinables) कहलाते हैं।

उदा. (१) **धीरे-धीरे** सब ठीक हो जाएगा। (२) दरवाजे के **पीछे** कोई खड़ा है।

(३) जोशी जी की लोकप्रियता **और** सफलता का जादू कम नहीं हुआ।

(४) **खैर**, लड़का दो मिनट में ही चाय की प्याली लेकर आया।

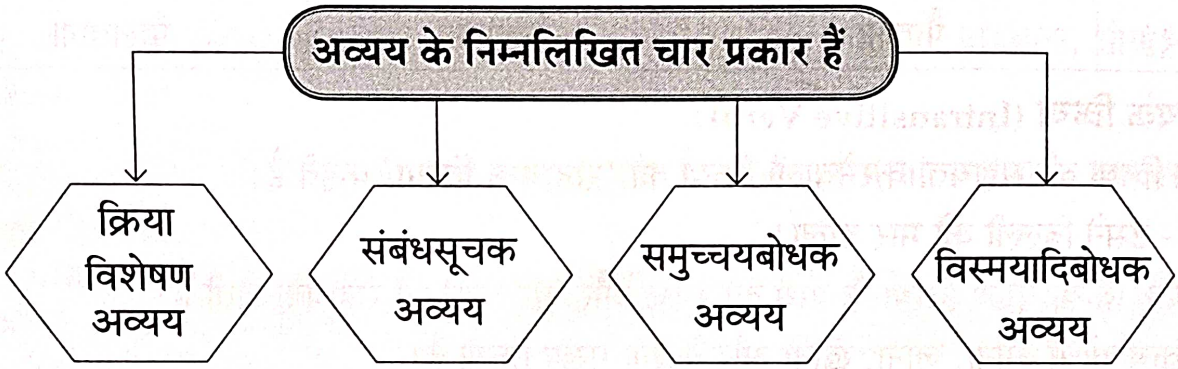

(१) क्रियाविशेषण अव्यय (Adverb)

जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, अर्थात् जहाँ वाक्य में हमें पता चलता है कि क्रिया कैसे, कब और कहाँ हो रही है, वहाँ पर वह शब्द **'क्रियाविशेषण अव्यय'** कहलाता है।

उदा. (१) युवक ने **धीरे-से** उत्तर दिया। (२) कहो, **कहाँ** चले ?

उपर्युक्त वाक्यों में **'धीरे-से'** यह क्रिया की रीति सूचित करता है और **'कहाँ'** यह क्रिया के स्थान के बारे में जानकारी देता है, इसलिए ये दोनों क्रियाविशेषण अव्यय हैं।

क्रियाविशेषण अव्यय के उदाहरण : आसपास, आजकल, सर्वत्र, जरा, अचानक, मत, भी, आगे, पीछे, धीरे-धीरे, प्रतिदिन, नित्य, हर रोज, पहले, अभी, आज, कब, बहुधा, अंदर, बाहर, सामने, ऊपर, नीचे, पास, दूर, किंचित्, एक-एक, शायद, अवश्य, कदाचित, ठीक, केवल, बहुत, परसों, अकस्मात आदि।

क्रियाविशेषण के चार प्रमुख भेद हैं :

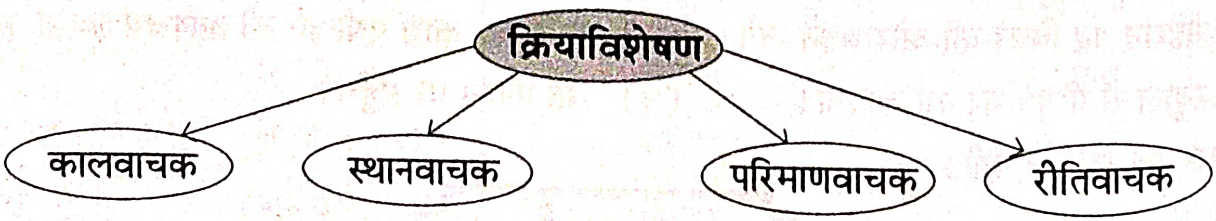

(२) संबंधसूचक अव्यय (Preposition)

जो अव्यय शब्द, संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में आए हुए अन्य शब्दों के साथ जोड़ता है, उसे **'संबंधसूचक अव्यय'** कहते हैं। इन वाक्यों में अक्सर संबंधसूचक अव्यय के पहले 'का, के, की, रा, रे, री' ये कारक आते हैं।

उदा. (१) उसकी आँखों के **सामने** अंधेरा छा गया। (२) जहाज कलकत्ता की **तरफ** बढ़ने लगा।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द **'सामने'** और **'तरफ'** संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के तुरंत बाद आए हैं और संज्ञा या सर्वनाम का संबंध अन्य शब्दों के साथ दर्शाते हैं।

संबंधसूचक अव्यय के उदाहरण : ओर, तरफ, बाद, आगे, पीछे, सामने, करीब, यहाँ, पूर्व, पास, बावजूद, लिए, अंदर, साथ, ऊपर, नीचे, बदौलत, सम्मुख, अपेक्षा, बजाय आदि।

(३) समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunction)

जो अव्यय शब्द, दो शब्दों को या दो वाक्यांशों या उप वाक्यांशों को जोड़ने का काम करता है, उसे **'समुच्चयबोधक अव्यय'** कहते हैं।

उदा. (१) मुर्गे **और** मुर्गियों से घर भरने लगा।

(२) उधर की अदालत से बच गए, **पर** यहाँ नहीं बच सकते।

उपर्युक्त पहले वाक्य में **'और'** शब्द ने 'मुर्गे-मुर्गियों' इन शब्दों को जोड़ने का और **'पर'** शब्द ने 'उधर की अदालत से बच गए', 'यहाँ नहीं बच सकते' इन दो वाक्यों को जोड़ने का काम किया है। अत: ये समुच्चयबोधक अव्यय हैं।

समुच्चयबोधक अव्यय के उदाहरण : और, एवं, अतएव, इसलिए, क्योंकि, कि, किंतु, बल्कि, अथवा, या, तो, पर, क्या, परंतु, मगर, ताकि, जब...तब, ज्यों...त्यों, जैसा...वैसा आदि।

(४) विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjection)

जो अव्यय हमारे मन में प्रसंगानुसार उत्पन्न होनेवाले सुख, दु:ख, प्रेम, नफरत, भय, विस्मय आदि भावों को या विकारों को सहज रूप में प्रकट करते हैं, उन्हें **'विस्मयादिबोधक अव्यय'** कहते हैं। यह अव्यय वाक्य में प्राय: आरंभ में आते हैं और वाक्य में इनका स्थान स्वतंत्र होता है।

उदा. (१) **अच्छा**! हम तुम्हें तौबा करने के लिए वक्त देते हैं। (२) **अरे**, तुम्हारा पत्र आया है रूपा।

उपर्युक्त वाक्य में '**अच्छा**' सांत्वनासूचक और '**अरे**' संबोधनसूचक शब्द है।

विस्मयादिबोधक अव्यय के उदाहरण : वाह, अहा, आह, ओह, अहाहा, अरे, अरेरे, काश, छिः, शाबास, ओफ, अच्छा, हे भगवान, हाय, ओहो आदि।

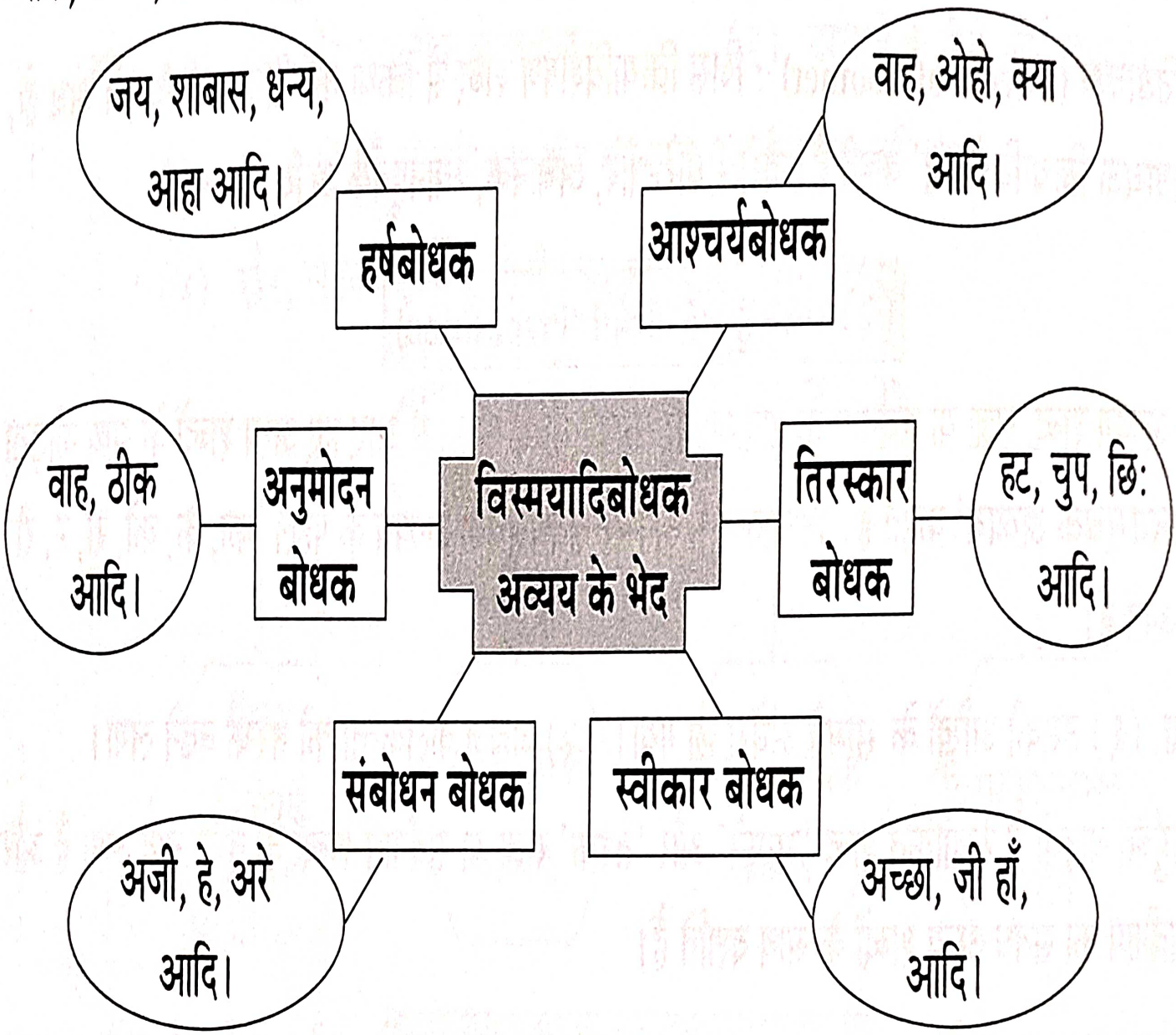

७ कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाए, उसे **'कारक'** कहते हैं।

जैसे : (१) बच्ची टेबल पर कूद रही है। (२) लड़का खिड़की से कूद गया।

(३) नेवले ने साँप को मारा। (४) रूबी पानी में खेल रही है।

उपयुक्त वाक्यों में बच्ची, टेबल, लड़का, खिड़की, नेवला, साँप, रूबी आदि संज्ञा पद हैं। इनका क्रिया के साथ संबंध बताने के लिए पर, से, ने, में इन विभक्तियों का प्रयोग किया गया है। इन चिह्नों को ही **'कारक'** कहते हैं। इन्हें 'परसर्ग चिह्न' या 'विभक्ति चिह्न' भी कहते हैं।

कारक के भेद एवं उसके विभक्ति चिह्न/परसर्ग चिह्न :

क्र.	कारक के भेद	कारक चिह्न
(१)	कर्ता कारक	ने
(२)	कर्म कारक	को
(३)	करण कारक	से, के द्‌वारा (साधन से)
(४)	संप्रदान कारक	के लिए
(५)	अपादान कारक	से (अलगाव के अर्थ से)
(६)	संबंध कारक	का, के, की, रा, रे, री
(७)	अधिकरण कारक	में, पर
(८)	संबोधन कारक	अरे!, हे!, ओ!, अजी! आदि।

(१) **कर्ता कारक** (Nominative) : शब्द के जिस रूप से काम करने का बोध हो, उसे **'कर्ता कारक'** कहते हैं। इसमें **'ने'** विभक्ति लगती है। इसका उपयोग सकर्मक क्रियाओं के साथ भूतकाल में ही होता है।

उदा. - (१) **रोहित ने** पत्र लिखा। (२) **राम ने** गाँव छोड़ दिया।

(३) **करन ने** मुझे मारा था। (४) **मैंने** काम पूरा कर लिया।

(२) **कर्म कारक** (Objective) : जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर वाक्य में स्थित अन्य संज्ञा पर पड़ता है, तब उसे **'कर्म कारक'** कहते हैं। इसमें **'को'** विभक्ति लगती है।

'कर्म कारक' की पहचान करते समय क्रिया से **'क्या' 'और' 'किसको'** प्रश्न करने पर उत्तर में कर्म कारक आता है।

उदा. - (१) राम ने **रावण को** मारा। (२) **रमेश को** पुरस्कार मिला।

(३) **संजय को** डाँट पड़ी। (४) रमन **क्रिकेट** खेलता है।

(३) **करण कारक** (Instrumental) : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से कार्य को किसी साधन के द्‌वारा संपन्न कराने का बोध होता हो, उसे **'करण कारक'** कहते हैं। इसमें **'से' 'के द्‌वारा'** विभक्ति लगती है।

उदा. - (१) राकेश **बस से** विद्‌यालय जाता है। (२) **रेलगाड़ी के द्‌वारा** लोग अपने गाँव जाते हैं।

(४) **संप्रदान कारक (Dative)** : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से जब किसी के लिए कोई काम करने या कुछ देने का बोध हो, उसे '**संप्रदान कारक**' कहते हैं। इसमें '**को**' या '**के लिए**' विभक्ति लगती है।

उदा. - (१) माँ ने सोहन **को** आम दिया। (२) पिताजी ने राम **के लिए** नई कमीज़ लाई।

(५) **अपादान कारक (Ablative)** : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी वस्तु से अलग होने का पता चलता हो, उसे '**अपादान कारक**' कहते हैं। इसमें से (अलग होने के अर्थ से) विभक्ति लगती है।

उदा. - (१) संजित **पेड़ से** गिर गया। (२) नदी **पहाड़ों से** निकलती है।

पहले वाक्य में संजित के पेड़ से अलग होने तथा दूसरे वाक्य में पहाड़ों से नदी के अलग होने का भाव प्रकट हो रहा है।

(६) **संबंध कारक (Genitive)** : जब संज्ञा अथवा सर्वनाम का वाक्य में उपस्थित अन्य संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों से संबंध दिखाया जाता है, तब वहाँ '**संबंध कारक**' होता है। इसमें '**का, के, की, रा, रे, री**' विभक्ति लगती है।

उदा. - (१) **सोहन का** भाई रोहन है। (२) **मोहन के** नाना जी आए।

(३) **रोहन की** माँ बाज़ार गई। (४) तुम्हारा भाई विद्वान है।

पहले वाक्य में 'सोहन का' भाई के साथ, दूसरे वाक्य में 'मोहन का' नाना जी के साथ, तीसरे वाक्य में 'रोहन का' माँ के साथ तथा चौथे वाक्य में 'तुम्हारा का' भाई के साथ संबंध बताया गया है।

(७) **अधिकरण कारक (Locative)** : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से जहाँ पर या जिस जगह क्रिया के घटित होने का बोध होता हो, वहाँ '**अधिकरण कारक**' होता है। इसमें '**में**', '**पर**' विभक्ति लगती है।

उदा. - (१) मेहमान **बगीचे में** बैठे हैं। (२) राम ने **मेज़ पर** पुस्तक रखी।

उपर्युक्त वाक्यों में '**बैठे हैं**' क्रिया का आधार '**बगीचा**' है तथा '**रखी**' क्रिया का आधार '**मेज़**' है। अत: '**बगीचा**' और '**मेज़**' अधिकरण कारक हैं।

(८) **संबोधन कारक (Addresive)** : संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से जब किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम को संबोधित करने तथा उसका ध्यान आकर्षित करने का बोध हो, उसे '**संबोधन कारक**' कहते हैं। इसमें '**हे**', '**अरे**', '**ओ**', '**अजी**' आदि विभक्ति लगती हैं।

उदा. - (१) **हे ईश्वर!** इन मूर्खों को बुद्धि दो। (२) **अरे अतिथियों!** शोर मत करो।

इन वाक्यों में क्रमश: '**ईश्वर**' और '**अतिथियों**' को पुकारने का भाव प्रकट होता है। अत: हे!, अरे! आदि संबोधन चिह्न हैं। संबोधन कारक के बाद संबोधन चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(४) **प्रेरणार्थक क्रिया (Compound Verb) :**

जिस क्रिया के व्यापार में कर्ता पर किसी अन्य की प्रेरणा जानी जाती है उसे **'प्रेरणार्थक क्रिया'** कहते हैं।

जैसे - माँ ने बेटी से खाना पकवाया।

वाक्य में 'पकवाया' क्रिया से 'बेटी' कर्ता पर 'माँ' कर्ता की प्रेरणा जानी जाती है। अधिकतर अकर्मक और सकर्मक से प्रेरणार्थक क्रिया बनती है।

प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के नियम :

(१) पहली प्रेरणार्थक में **आ** और दूसरी में **वा** का जुड़ना। जैसे - चढ़ - चढ़ाना - चढ़वाना, गिर - गिराना - गिरवाना आदि।

(२) धातु के बीच में यदि दीर्घ स्वर हो तो ह्रस्व करने से। जैसे : जग - जगाना - जगवाना, सीख - सीखाना - सीखवाना आदि।

(३) धातु के अंत में दीर्घ स्वर हो तो उसे प्राय: 'ला' जुड़ता है। जैसे - रो (ना) - रुलाना, रुलवाना, दे(ना) - दिलाना, दिलवाना आदि।

क्र.	मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(१)	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
(२)	खाना	खिलाना	खिलवाना
(३)	उठना	उठाना	उठवाना
(४)	काटना	कटाना	कटवाना
(५)	समझना	समझाना	समझवाना
(६)	रोकना	रुकाना	रुकवाना
(७)	डरना	डराना	डरवाना
(८)	कटना	काटना	कटवाना
(९)	सजना	सजाना	सजवाना
(१०)	सीखना	सिखाना	सिखवाना
(११)	भूलना	भुलाना	भुलवाना
(१२)	बनना	बनाना	बनवाना
(१३)	सुनना	सुनाना	सुनवाना
(१४)	लिखना	लिखाना	लिखवाना
(१५)	मिटना	मिटाना	मिटवाना

क्र.	मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(१६)	उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
(१७)	बैठना	बिठाना	बिठवाना
(१८)	जागना	जगाना	जगवाना
(१९)	रखना	रखाना	रखवाना
(२०)	माँगना	मँगाना	मँगवाना
(२१)	फैलना	फैलाना	फैलवाना

(५) **सहायक क्रिया (Intransitive Verb) :**

मुख्य क्रिया की सहायता करनेवाली क्रिया को '**सहायक क्रिया**' कहते हैं।

जैसे - उसने बिल्ली को मार डाला।

सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट और पूरा करने में सहायक होती है।

इन क्रियाओं में आना, जाना, खाना और देखना मुख्य क्रिया है।

उदा. महेश जोर-जोर से हँसता है।

इस वाक्य में 'हँसना' मुख्य क्रिया है तथा शेष क्रिया 'है' सहायक क्रिया है।

स्वाध्याय : अ

प्रश्न १. निम्नलिखित वाक्यों में प्रेरणार्थक क्रिया का रूप पहचानकर उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(१) जिसे वहाँ से जबरन हटाना पड़ता था।
(२) नीचे अँगूठा लगवाया।
(३) उसने तुम्हें पता ठीक लिखवाया होगा।
(४) माँ ने बेटी को रोटी खिलाई।
(५) महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा निर्मित होने से 'उम्मेद भवन' कहलवाया जाता है।

स्वाध्याय : ब

प्रश्न २. निम्नलिखित वाक्यों में सहायक क्रिया पहचानिए।

(१) हम मेहरान गढ़ किले की ओर बढ़ने लगे।
(२) काँच का कार्य पर्यटकों को आश्चर्यचकित कर देता है।
(३) प्ले स्कूल से पीयूष घर आ जाएगा।
(४) वह फौरन घर पहुँचे।
(५) मुझसे नहीं खाई जाएगी।

गृहकार्य

प्रश्न १. सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(१) होना (२) पड़ना (३) रहना (४) करना (५) बढ़ना

★★★